नमाज़े जनाज़ा का मुख्तसर तरीक़ा

तालीफ़:

मुहम्मद वसीम अत्तारी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नमाज़े जनाज़ा का मुख़्तसर तरीक़ा

तालीफ :

मुहम्मद वसीम अत्तारी
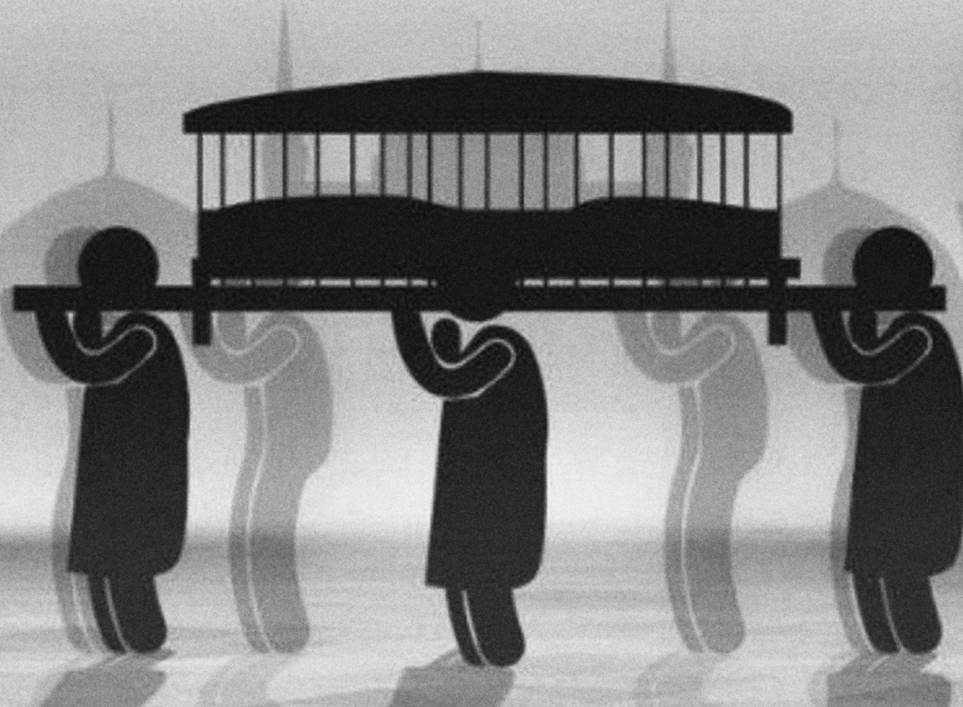
wasimgoripathan1987@gmail.com

मर्द व औरत कि नमाज़े जनाजा का मुख़्तसर तरीक़ा ह़नफी

मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की वासिते अल्लाह तआला के, दुआ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के

अब हाथ उठाएं और

اَللّٰہُ اَکۡبَرُ

कहते हुए नाफ़ के नीचे हाथ बांध लें

अब सना पढ़ें

سُبۡحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ وَتَبَارَکَ اسۡمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَجَلَّ ثَنَاؤُکَ وَلَا اِلٰہَ غَیۡرُکَ

अब बिगैर हाथ उठाए

اَللّٰہُ اَکۡبَرُ

कहें

अब दुरुदे इब्राहीम पढ़ें

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکۡتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا اِبۡرَاھِیۡمَ اِنَّکَ حَمِیۡدٌ مَّجِیۡدٌ

अब

अब बिग़ैर हाथ उठाए

اَللّٰهُ اَكْبَرْ

कहें

अब दुआ़ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

अब

اَللّٰهُ اَكْبَرْ

कहें और हाथ लटका दें

अब दोनों तरफ़

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰه

फैर दें

नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न है:

(1) चार बार اَللّٰهُ اَكْبَرْ कहना (2) कियाम।

नमाज़े जनाज़ा में तीन चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा येह हैं:

(1) अल्लाह तआला कि ह़म्दो सना (2) नबी ﷺ पर दुरुद

(3) मय्यित के लिये दुआ़।

नाबालिग लड़के की दुआ।

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

नाबालिगह लड़की की दुआ।

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

दुआ:

अल्लाह पाक हमें इ़ल्मे दीन सीखने अ़मल करने और दूसरों तक पहुंचाने की तौफीक़ अ़ता फरमाए। آمین

नोट:

इस किताब में किसी भी त़रह की गलति़यां पाएं तो हम से इस पते पर राब्त़ा फरमाएं।

wasimgoripathan1987@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मसअला

नमाज़े जनाज़ा फ़र्जे किफ़ाया है

के एक ने भी पढ़ली तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा (सब के फर्ज अदा) हो गऐ।

(बहारे शरीअत,01 स 825/ "अद्दर्रुल मुख्तार " व "रद्दुल मुहतार" 3, स 120)

Address:

wasimgoripathan1987@gmail.com

मज़ीद किताबें पढ़ने के लिए इस Telegram logo पर क्लिक करें।